'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 18 | 19 दिसम्बर, 2018 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य तनसिंह जी की पुण्यतिथि

'आवृत्ति बढ़ाएं, अंतराल घटाएं'

पूज्य तनसिंह जी एक जागृत महापुरुष थे। वे एक क्षण भी अजागृत नहीं रहे। हम पहली बात तो जागते ही नहीं है और जागते हैं तो सो जाते हैं, फिर जागते हैं और सो जाते हैं। यही क्रम चलता रहता है। यह जागने और सोने का क्रम जीवन का आवश्यक क्रम है। इसकी आवृत्ति बढ़ाएं। इनके बीच अंतराल जितना कम होगा जागृति के क्षण उतने ही अधिक होंगे। इसलिए सोने के बाद जागने की आवृत्ति बढ़ाए और दोनों के बीच अंतराल को घटाएं। परिवार, बच्चों, पड़ौस से व्यवहार करते समय हम भूल जाते हैं कि इसका उन पर क्या फर्क पड़ेगा। यह भूलना यदि स्मृति में बदल जाए तो उनकी यह पुण्यतिथि हमारे काम आएगी।

7 दिसम्बर को पूज्य तनसिंह जी की पुण्यतिथि के अवसर पर केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि वे हमें संघ रूपी मार्ग क्यों बता गए, क्या

तकलीफ थी उनको? तो वास्तव में वे एक जागृत महात्मा थे और हमें जगाना चाहते थे। उन्होंने हमें अपने वक्तव्य से नहीं कृतित्व से जीवन की कला सिखाई। कर्म, ज्ञान और भक्ति के मार्ग पर उनका जीवन चलता रहा। अनेक लोगों ने उनका सानिध्य पाया लेकिन समझ कितना पाए? जिन लोगों को भौतिक सानिध्य नहीं मिला उनके लिए उनकी लिखी पुस्तकें, गीत आज हमारे पास उनकी अमूल्य निधि है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अंतिम पायदान से आगे बढ़ने का दिन

आगामी 22 दिसम्बर को हम सब श्री क्षत्रिय युवक संघ का 73वां स्थापना दिवस मनाने जा रहे हैं। 22 दिसम्बर अंतिम पायदान से आगे बढ़ने का संदेश देने वाला दिन है। 22 की रात सबसे बड़ी रात होती है। अंधकार अपने प्रसार की अधिकतम सीमा को छू चुका होता है इस दिन तक। इसके बाद प्रकाश का दायरा बढ़ने लगता है। वर्ष में सूर्य की ऊर्जा एवं ऊष्मा में जितनी कमी आनी होती है आ जाती है इस दिन तक। इसके बाद इसे बढ़ना ही होता है क्योंकि हमारी भारत भूमि और ऊर्जा, ऊष्मा एवं प्रकाश के दाता सूर्य के बीच की दूरी जितनी बढ़नी होती है वह बढ़ जाती है इस दिन तक और 22 दिसम्बर के बाद सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर अपनी यात्रा को विराम दे उत्तरी गोलार्द्ध की ओर उन्मुख होता है, भारत भूमि की ओर उन्मुख होता है और यही दिन है श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस जब हमारे समाज में प्रकाश, ऊर्जा एवं ऊष्मा रूपी नव जागरण का श्री गणेश हुआ। आईए आज इस शुभ दिन पर हमारे जीवन में इस नवजागरण को आमंत्रित करें, स्थायित्व प्रदान करें और प्रसारित करें।

राजस्थान विधानसभा चुनावों में विजयी राजपूत प्रत्याशी

1.	नरपतसिंह राजवी	विद्याधर नगर	भाजपा
2.	राजेन्द्रसिंह राठौड़	चुरू	भाजपा
3.	पुष्पेन्द्रसिंह राणावत	बाली	भाजपा
4.	नारायणसिंह देवल	रानीवाड़ा	भाजपा
5.	हमीरसिंह भायल	सिवाणा	भाजपा
6.	चन्द्रभानसिंह	चित्तौड़गढ़	भाजपा
7.	कल्पना देवी	लाडपुरा	भाजपा
8.	सुरेन्द्रसिंह राठौड़	कुंभलगढ़	भाजपा
9.	सिद्धिकुमारी	बीकानेर पूर्व	भाजपा
10.	मीना कंवर	शेरगढ़	कांग्रेस
11.	भंवरसिंह भाटी	कोलायत	कांग्रेस
12.	दीपेन्द्रसिंह शेखावत	श्रीमाधोपुर	कांग्रेस
13.	प्रतापसिंह खाचरियावास	सिविल लाईन्स	कांग्रेस
14.	गिर्राजसिंह मलिंगा	बाड़ी	कांग्रेस
15.	गजेन्द्रसिंह शक्तावत	वल्लभनगर	कांग्रेस
16.	भरतसिंह कुंदनपुर	सांगोद	कांग्रेस
17.	राजेन्द्रसिंह गुढ़ा	उदयपुरवाटी	बसपा
18.	खुशवीरसिंह जोजावर	मारवाड़ जंक्शन	निर्दलीय

मध्यप्रदेश के राजपूत विधायकों की सूची देखें पृष्ठ 6 पर

जवाब मांगते सवाल

राजस्थान विधानसभा चुनावों के परिणाम आ गए। 15वीं विधानसभा में हमारे 18 विधायक पहुंचे हैं। भाजपा ने 25 टिकटें दी जिनमें से 9 जीते वहीं कांग्रेस ने 13 टिकटें दी जिनमें से 7 जीत गए। विगत तीन चार विधानसभाओं का आकलन करें तो यह संख्या न्यूनतम है। हम 57 से 17 तक पहुंचे थे, फिर बढ़ने लगे लेकिन इस बार पुनः 17 की सीमा को छूते छूते बचे हैं। हमारी यह स्थिति हमसे कुछ सवाल पूछती है जिनका उत्तर समाज की राजनीतिक स्थिति को दमदार बनाने की चाह रखने वाले हर व्यक्ति ढूंढ़ना को चाहिए, यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो यह चाह मात्र चाह ही बनी रहेगी, इसे धरती पर उतारना संभव नहीं होगा। पहला सवाल तो यही है कि सरपंच के चुनावों के अलावा शेष लगभग सभी चुनाव दलगत राजनीति के आधार पर लड़े जाते हैं। हम यदि सरपंच से आगे कुछ बनना चाहते हैं तो राजनीतिक दल के टिकट के बिना जीतना असंभव नहीं तो अति कठिन अवश्य है। यह हमारे अनेक योग्य निर्दलीय उम्मीदवारों की इस चुनाव में स्थिति से स्पष्ट होता है। अनेक लोगों ने अच्छी टक्कर दी लेकिन चुनाव पूरे होते-होते मतदाताओं का ध्रुवीकरण राजनीतिक दलों की तरफ हो गया। हम कह सकते हैं कि राजनीतिक दल हमें टिकट ही नहीं देते तो उसका एक मात्र उपाय टिकट हासिल करना ही है और यही बड़ा प्रश्न है कि हमारी राजनीति अधिकतम टिकटें लेने की कैसे हो?

दूसरा सवाल यह उभर कर आता है कि हमारा एक राजनीतिक दल के साथ ही जुड़ाव अधिक है और जब वह दल सत्ता से बाहर होता है हमारी संख्या कम हो जाती है ऐसे में हमारे सामने प्रश्न है कि हम यह संतुलन कैसे बनाएं लेकिन संतुलन बनाने के लिए कदम उठाने से पहले कदम रखने का स्थान अवश्य बनाएं नहीं तो इस बार एक दल विशेष ने जिस प्रकार हमारे आगे होकर समर्थन करने की जो उपेक्षा की, वैसा फिर हो जाएगा। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

मर्यादापालन व्यक्ति का बहुत बड़ा गुण होता है। महापुरुष जिस व्यवस्था में रहते हैं उस व्यवस्था की मर्यादाओं का पालन करते हैं और उन्हीं मर्यादाओं के बीच अपनी स्वयं की मर्यादाएं निश्चित कर उनका पालन करते हैं। पूज्य तनसिंह जी छोटी-छोटी मर्यादाओं का पूरा ध्यान रखते थे और उनका कठोरता पूर्वक पालन करते थे। इस बात को पुष्ट करने वाली उनके जीवन की ऐसी अनेकों घटनाएं हैं। ऐसी ही एक घटना 1972 के चुनावों के समय की है। उस चुनाव में भैरोसिंह जी बाड़मेर से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे। जनसंघ एवं स्वतंत्र पार्टी का आपस में समझौता हुआ था और उसी के तहत स्वतंत्र पार्टी से जुड़े लोग भैरोसिंह जी का सहयोग कर रहे थे। जोधपुर महाराजा ने सरदार समंद में इस बाबत एक बैठक रखी जिसमें तनसिंह जी भी शामिल हुए। स्वतंत्र पार्टी से जुड़े अनेक पूर्व ठिकानेदार आदि भी उस बैठक में थे। जोधपुर महाराजा उस समय इंग्लैण्ड में अध्ययन कर लौटे ही थे एवं सार्वजनिक जीवन में उनका यह प्रारंभिक समय था। वह बैठक महाराजा के नेतृत्व में रखी गई थी। वे उस बैठक के अध्यक्ष थे। बैठक में बोलने वालों में तनसिंह जी भी का नाम था और उन्होंने अपना संबोधन दिया। लेकिन उस प्रवाह में नहीं बोले जैसे हमेशा बोलते थे। बैठक के बाद साथ में गए स्वयंसेवकों में से किसी ने पूछा कि आज आप हमेशा बोलते हैं वैसे नहीं बोले, आपका उद्‌बोधन जम नहीं पाया। पूज्य श्री का उत्तर था कि आज की बैठक के अध्यक्ष जोधपुर के पूर्व महाराजा हैं जिन्हें पूरा मारवाड़ और विशेषकर मारवाड़ का राजपूत समाज आज भी अगुवा मानता है। वे अभी-अभी विदेश से आए हैं इसलिए मुझे पता है कि इतने प्रभावी ढंग से नहीं बोल पाएंगे। ऐसे में उनसे पहले जो भी बोले उसका उद्‌बोधन उनसे हल्का होना चाहिए यह बैठक की मर्यादा है। उसी मर्यादा का पालन करने के लिए मैं जान बूझकर वैसा नहीं बोला जैसा हमेशा बोलता हूं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब उन्होंने अपने आपको कम कर अन्यों को बड़ा बनाने का प्रयास किया। यह भी एक ऐसा हा प्रयास था। जिस व्यक्ति का एक बड़ा जनमानस सम्मान करता है उसकी मर्यादा के लिए स्वयं को हल्का सिद्ध करना पड़े तो भी किया जाना चाहिए और यही उन्होंने उस दिन भी किया। यह था उनका मर्यादा पालन।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

विगत अंकों में गणित तथा जीव विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध कैरियर विकल्पों पर चर्चा के पश्चात् अब हम कृषि विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध विकल्पों की जानकारी प्राप्त करेंगे। भारतीय अर्थ व्यवस्था आज भी मुख्यतः कृषि आधारित है तथा कृषि क्षेत्र के सम्यक और सर्वांगीण विकास में ही राष्ट्र का विकास भी निहित है। कृषि एवं उससे संलग्न क्षेत्रों में बढ़ते शोध व तकनीकी विकास के साथ इस क्षेत्र में रोजगार की संभावना भी बढ़ रही है। कृषि विज्ञान के साथ 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थियों के लिए तीन प्रकार के कोर्स उपलब्ध हैं- (1) बैचलर डिग्री कोर्सेज (2) डिप्लोमा कोर्स (3) सर्टिफिकेट कोर्स।

(1) बैचलर डिग्री कोर्स : इसके अन्तर्गत उपलब्ध पाठ्यक्रमों की सूची इस प्रकार है :

- बी.ई./बी.टेक. इन एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग।
- बी.ई./बी.टेक. इन एग्रीकल्चरल इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी।
- बी.ई./बी.टेक. इन डेयरी टेक्नोलॉजी।
- बी.ई./बी.टेक. इन एग्रीकल्चरल एण्ड फूड इंजीनियरिंग।
- बी.एस.सी. इन एग्रीकल्चर। ● बी.एस.सी. इन डेयरी साईन्स। ● बी.एस.सी. इन प्लान्ट साईन्स।
- बी.एस.सी. इन एग्रीकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी।
- बी.एस.सी. इन एग्रीकल्चर एण्ड फूड साईन्स। ● बी.एस.सी. इन होर्टीकल्चर।
- बी.एस.सी. इन फिशरीज साईन्स। ● बी.एस.सी. इन प्लान्ट पैथोलॉजी।
- बी.एस.सी. इन फॉरेस्ट्री। ● बी.बी.ए. इन एग्रीकल्चरल मैनेजमेन्ट।

उपरोक्त कोर्सेज में बी.ई./बी.टेक. की अवधि चार वर्ष है, जबकि बी.एस.सी. व बी.बी.ए. की अवधि तीन वर्ष है।

(2) डिप्लोमा कोर्सेज : कृषि विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध मुख्य डिप्लोमा कोर्स इस प्रकार हैं।

- डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर। ● डिप्लोमा इन डेयरी टेक्नोलॉजी। ● डिप्लोमा इन होर्टीकल्चर।
- डिप्लोमा इन फ्लोरीकल्चर। ● डिप्लोमा इन फूड प्रोसेसिंग।

(3) सर्टिफिकेट कोर्सेज : कुछ प्रमुख सर्टिफिकेट कोर्स इस प्रकार हैं :

- सर्टिफिकेट इन होर्टीकल्चर। ● सर्टिफिकेट इन बी. कीपिंग (मधुमक्खी पालन)।
- सर्टिफिकेट इन फ्लोरीकल्चर। ● सर्टिफिकेट इन एक्वाकल्चर।
- सर्टिफिकेट इन फिश फार्मिंग। ● सर्टिफिकेट इन फ्रुट प्रोडक्शन।

उपरोक्त सर्टिफिकेट कोर्स की अवधि 1-2 वर्ष तक है।

इनके अतिरिक्त बैचलर (स्नातक) स्तर की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् स्नातकोत्तर स्तर के डिग्री, डिप्लोमा व सर्टिफिकेट कोर्सेज भी उपलब्ध हैं। स्नात्तकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएट) के पश्चात् विद्यार्थी के पास पी.एच.डी. का विकल्प भी उपलब्ध है।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

आदि भवानी मां हींगलाज

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

राजा दक्ष प्रजापति की कन्या तथा शिव पत्नी सती के शव को लेकर विकराल और विक्षिप्त रूप में क्रोद्धित होकर जब भगवान शिव ब्रह्माण्ड में इधर-उधर विचरने लगे तब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शव के 52 टुकड़े कर दिए। ये 52 अंग जहां-जहां गिरे वहां वहां शक्तिपीठों की स्थापना की गई। रानी के सिर से ब्रह्मरंध्र ही गोल पर्वत पर गिरा। इस हींगलाज स्थान को 52 शक्तिपीठों में सबसे बड़ा पीठ माना गया है। हींगलाज मां के साथ यहां भीमलोचन भैरूजी की पूजा की जाती है। बंगाल में कालिका, हिमाचल में ज्वालामुखी, तमिलनाडु में कन्याकुमारी, आसाम में कामाख्या, राजस्थान में आबूपर्वत पर अधर (अर्बुदा) देवी आदि अन्य 51 शक्तिपीठ के हैं।

वर्तमान में हींगलाजा माता का स्थान पाकिस्तान के बलुचिस्तान राज्य में ईरान से लगती सीमा पर स्थित है। यह पाक के सिन्ध राज्य की राजधानी एवं बन्दरगाह कराची से सीधे सड़क मार्ग द्वारा लगभग 220 किमी दूर है। यह इलाका पठारी एवं पहाड़ी है। पठार कहीं शुष्क तो कहीं रमणीय है। पुराने जमाने में हींगलाज माता की यात्रा को अत्यन्त दुष्कर माना जाता था। मनुष्य विहीन वीरान रास्ते, पानी की कमी तो कहीं नदियां एवं दरिया पार करना, ऊबाऊ एवं डरावना रास्ता, ऊंटों-घोड़ों अथवा पैदल ही यात्रा करना, गन्तव्य तक जाकर वापिस सुरक्षित घर आना पुण्य के साथ पुर्नजन्म माना जाता था। नाथ संप्रदाय के गुरु गोरखनाथ एवं सिख पंथ के प्रर्वतक गुरु नानक देव ने हींगलाज की यात्रा की। मां करणी एवं मां आवड़ हींगलाज मां का स्वरूप माने जाते हैं। चारण कवियों ने मां हींगलाज की खूब स्तुतियां बनाई एवं गाई हैं।

मां थारो पंथ खड़ग (तलवार) री धार।
हींगोल मां तू करजे म्हारो बेड़ो पार।।

मां हींगलाज को हिन्दुओं के साथ-साथ मुसलमान भी पूजते हैं। मुसलमान मां को नानी बीबी कहकर पुकारते हैं। मां का स्थान हींगलाज तो इस्लाम धर्म के आने से हजारों वर्ष पूर्व का है। हींगलाज मंदिर से पहले शिव एवं गणेश के मंदिर आते हैं जहां पर पूजा कर आगे जाया जाता है। मूल मंदिर पठार की ऊंचाई पर स्थित है जो ज्यादा बड़ा नहीं है और मुख्य मूर्ति भी कश्मीर के मां वैष्णो देवी के पिण्ड दर्शन मूर्तियों जैसी लगती है। यहां पर जल के कुण्ड बने हैं जिसमें स्नान करने के उपरान्त मां की आरती, यज्ञ आदि कर उन्हें लाल चुनर ओढाई जाती है। यहां मुख्य मंदिर के पास ही आशापुरा महाकाली एवं हनुमानजी के छोटे मंदिर भी हैं। यहां आसपास कोई ज्यादा आबादी नहीं है। तीर्थ यात्री भी कम ही आ पाते हैं। उनके रहने के लिए धर्मशालाएं बनी हुई हैं। नवरात्रा में यहां काफी संख्या में लोग दर्शन लाभ लेने आते हैं।

'तूं ही हिंगलाज महारानी।
तूं ही शीतला अरु विधानी।।
दुर्गा दुर्गा विनाशिनी माता।
तूं ही लक्ष्मी जग सुख दाता।।'

हिन्दुस्तान के 1947 में बंटवारे के समय गुजरात के स्वामी नारायण सम्प्रदाय का कराची (सिंध) का मंदिर, बलोचिस्तान का हींगलाज पीठ, सिक्खों का बड़ा तीर्थ ननकाना साहिब (गुरु नानक देव का जन्म स्थान) तथा कठासराज का प्रसिद्ध मंदिर पाकिस्तान में रह गए। पेशावर के पास सुप्रसिद्ध तक्षशिला विश्व विद्यालय के भग्नावशेष, पंजाब की पांच नदिया व्यास, रावी, झेलम, चिनाब व सतलज तथा कैलाशमान सरोवर के पास निकलने वाली सिन्धु नदी पाक में रह गई। सिन्धु नदी के तटों पर भारत की उन्नत तथा विश्व की सबसे समृद्ध सभ्यता पनपी थी जिसके अवशेष मोहन जो दड़ो व हड़प्पा पाक में हैं। कहा जाता है कि इन्हीं स्थानों पर ही हमारे वेदों की ऋचाएं संकलित की गई थीं।

भारतीय संसद में राज्यसभा के तत्कालीन उप नेता श्री जसवंतसिंह जसोल ने जनवरी 2006 में सड़क मार्ग से सिन्ध के खोखरा पार मुनाबाव (बाड़मेर) रास्ते हींगलाज मां की यात्रा की थी। जिसमें दल के 86 सदस्य थे जो हिन्दू मुसलमान धर्म से थे। सांसद थे, विधायक थे। 36 कौमों का प्रतिनिधित्व था। लोक कलाकार भी साथ चले थे।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

राजस्थान विधानसभा चुनावों में विजयी होने पर कांग्रेस पार्टी के राजपूत विधायकों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्री भरतसिंह कुंदनपुर
विधानसभा क्षेत्र सांगोद (कोटा)

श्री दीपेन्द्रसिंह शेखावत
विधासभा क्षेत्र श्री माधोपुर (सीकर)

श्री प्रतापसिंह खाचरियावास
विधानसभा क्षेत्र सिविल लाईन्स (जयपुर)

श्री गजेन्द्रसिंह शक्तावत
विधानसभा क्षेत्र वल्लभ नगर (उदयपुर)

श्री भंवरसिंह भाटी
विधानसभा क्षेत्र कोलायत (बीकानेर)

श्री गिर्राजसिंह मलिंगा
विधानसभा क्षेत्र बाड़ी (धौलपुर)

श्रीमती मीना कंवर
विधानसभा क्षेत्र शेरगढ़ (जोधपुर)

शुभेच्छु : पन्नेसिंह पोषाणा
कार्यवाहक जिला अध्यक्ष युवक कांग्रेस, जालोर
Mob.: 9462133361, 8619655983

संपादकीय

राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद

राष्ट्र शब्द एक संज्ञा शब्द है। इसमें 'ईय' प्रत्यय लगने से यह एक विशेषण बन जाता है। जैसे किसी पशु के आगे राष्ट्रीय लगने से वह विशिष्ट बन जाता है। राष्ट्रीय पशु होना उसकी विशेषता बन जाती है। इसी राष्ट्रीय शब्द में 'ता' प्रत्यय लगने से शब्द राष्ट्रीयता बनता है जो एक नए प्रकार की विशेषता का द्योतक है। 'ता' प्रत्यय तत्व शब्द का परिचायक है। इस प्रकार एक राष्ट्र के जो मूलभूत तत्व होते हैं, जो मूलभूत विशिष्टताएं होती हैं वे राष्ट्रीयता में समाविष्ट होती हैं। जैसे भारत राष्ट्र की कुछ मूलभूत विशेषताएं हैं उनको धारण करना, उनका पालन करना एवं उनका विस्तार करना भारतीय राष्ट्रीयता को धारण, पालन एवं प्रसार करना है। इसी प्रकार एक शब्द राष्ट्रवाद भी प्रचलन में है। यह शब्द राष्ट्र शब्द में 'वाद' प्रत्यय लगने से बना है। वाद का अर्थ एक पक्ष विशेष हो जाता है। इसमें एक पक्ष को अन्य से श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता है और अन्य से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए शेष को नेष्ठ बताने का भी प्रयास किया जाता है। वाद को वाद विवाद या न्यायालय में पेश किए जाने वाले वाद-प्रतिवाद से समझा जा सकता है।

इस प्रकार इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रवाद दोनों अलग-अलग शब्द हैं और दोनों ही अलग-अलग अवधारणाएं हैं। राष्ट्रीयता जहां अपने राष्ट्रगत तत्वों का पालन और प्रसारण है वहां राष्ट्रवाद अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करना है। दोनों ही अवधारणाओं को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो भारतीय अवधारणा राष्ट्रवाद की अपेक्षा राष्ट्रीयता के अधिक निकट है। राष्ट्रवाद को भारत ने सदा हतोत्साहित ही किया लेकिन राष्ट्रीयता को सदैव प्रतिष्ठापित किया। महाभारत सम्पूर्ण जीवन की कहानी है और महाभारत ने भारतीय अवधारणा के हर पहलु को छूकर स्पष्ट किया है। महाभारत के पितामह भीष्म राष्ट्रवाद के आदर्श प्रतीक हैं। उनके लिए हस्तिनापुर ही धर्म है और उस धर्म की पालना में वे पांचालों को अपना दुश्मन मानते हैं। उस धर्म के लिए उन्होंने अपने अंधे पोते के लिए गंधार राजकुमारी का हाथ मांग कर गंधार नरेश को विवाह के लिए मजबूर किया क्योंकि उनके लिए वही उचित था जो हस्तिनापुर के लिए किया जाए। हस्तिनापुर के अयोग्य राजकुमारों के लिए काशी नरेश की कन्याओं का अपहरण भी हस्तिनापुर की श्रेष्ठता के सिद्धि के ही कारण था और हस्तिनापुर के प्रति उनके इस राष्ट्रवाद के कारण ही गांधार के अपमान का बदला लेने शकुनि रूपी विषबेल ने उनके परिवार में अपना स्थायी आवास बनाया। परिणाम हमारे सामने है। एक महायुद्ध में उनका वह राष्ट्र व वे स्वयं विनाश को प्राप्त हुए। वास्तव में तो वाद कोई भी हो गलत ही होता है। जब जातिवाद बुरा है, संप्रदायवाद बूरा है तो राष्ट्रवाद अच्छा कैसे हो सकता है? दूसरी तरफ राष्ट्रीयता है। भारत की राष्ट्रीयता जिसके लिए धर्म की स्थापना, अमृत की स्थापना, न्याय की स्थापना ही लक्ष्य है और उसी भारतीय राष्ट्रीयता के आदर्श प्रतीक हैं भगवान श्रीकृष्ण। उनके लिए राष्ट्र का मतलब ही धर्म की स्थापना है क्योंकि उनका राष्ट्र किसी मथुरा, गोकुल या द्वारिका की भौगोलिक सीमाओं में नहीं बसता। उनका राष्ट्र वे तत्व हैं जिनकी पालना में वे अपने बड़े भाई बलराम की नाराजगी मोल लेकर भी अपनी बहिन का अर्जुन के साथ गंधर्व विवाह करवाते हैं। राष्ट्रीयता की बात करें तो हम भगवान राम को नहीं भूल सकते जिनका अपनी मातृभूमि अयोध्या से अतिशय प्रेम है, उसके लिए सदैव त्याग को तत्पर रहते हैं, वन में भी सदैव उसे याद करते हैं लेकिन कभी भी लंका पर अयोध्या का डंका जमाने की बात नहीं करते। किष्किंधा को जीत कर भी उसे अयोध्या का उपनिवेश नहीं बनाते बल्कि सुग्रीव और अंगद को उनका पैतृक राज्य सौंप देते हैं। यही अंतर है राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता में। राष्ट्रवाद कभी आदर्श नहीं हो सकता लेकिन राष्ट्रीयता सदैव स्तुत्य होती है। राष्ट्रवाद में जहां दमन है, अहंकार है वहीं राष्ट्रीयता में सम्मान है, स्वाभिमान है।

भारत का आदर्श कभी राष्ट्रवाद नहीं रहा क्योंकि यहां की राष्ट्रीयता में सदैव समावेशी संस्कृति समाहित रही। हर अवधारणा को परमेश्वर की ओर बढ़ने की एक सीढ़ी मानकर उसे यथोचित सम्मान दिया गया। यहां का आदर्श श्रीमद्भगवद्गीता किसी भी व्यक्ति की श्रद्धा पर आघात किए बिना जो जहां है वहीं उसकी श्रद्धा को पुष्ट करने की बात करती है। लेकिन युरोपीय नवजागरण से पोषित चिंतन के प्रभाव में भारत में भी राष्ट्रवाद ने अपना स्थान बनाया परन्तु राष्ट्रीयता भी साथ-साथ चलती रही। हाल ही के दिनों में फिर से राष्ट्रवाद की बातें हो रही हैं। यदि यह राष्ट्रवाद राष्ट्रीयता के निर्देशन में रहता है तब तो ठीक है लेकिन इसका अतिरेक हमेशा भावना के आवेग में निरंकुशता को पोषित करता है, स्वयं के अलावा सभी को नेष्ठ समझने लगता है। हम जिस परंपरा के वाहक हैं वह राष्ट्रवाद की नहीं बल्कि राष्ट्रीयता की है इसलिए हमें सावधानीपूर्वक अपनी परम्परा का वाहक बनना है।

खरी-खरी

समाज चरित्र और चुनावी माहौल

पूज्य तनसिंह जी ने एक निबंध लिखा है 'चेतक की समाधि से'। उस निबंध में उन्होंने चेतक के पर एक रूपक माध्यम से समाज चरित्र की अवधारणा को स्पष्ट किया है। एक घटना के बाद चेतक यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं मेवाड़ की वीर प्रसूता धरती पर जन्मा हूं एवं मेरे पूर्वज सदैव युद्ध से पलायन न करने वाली राजपूत कौम के सहायक रहे हैं इसलिए मैं भी कभी युद्ध से पीठ नहीं दिखाऊंगा। लेकिन हल्दीघाटी के युद्ध में उसके सामने जब धर्म संकट खड़ा होता है। एक तरफ युद्ध से न भागने की प्रतिज्ञा होती है तो दूसरी तरफ महाराणा प्रताप को युद्ध के मैदान से बाहर निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले जाने की मेवाड़ की आवश्यकता थी। चेतक ने उस समय अपनी प्रतिज्ञा की अपेक्षा मेवाड़ की आवश्यकता को तरजीह दी एवं तय किया कि आज मेवाड़ को मेरी प्रतिज्ञा से अधिक महाराणा प्रताप की आवश्यकता है। वह पूरे प्राण पण से युद्ध से भागता है और चौड़े नाले को पार कर महाराणा की जान बचाता है। वह अपनी व्यक्तिगत प्रतिज्ञा के पालनार्थ नहीं बल्कि मेवाड़ की आवश्यकता हेतु अपनी प्रतिज्ञा को तोड़कर अपना जीवन न्यौछावर करता है। प्रतिज्ञा पालनार्थ जीवन न्यौछावर करने के अनेक उदाहरण मिल सकते हैं लेकिन प्रतिज्ञा तोड़कर जीवन न्यौछावर करने का यह अद्भुद रूप के है। यही समाज चरित्र है। हमारे जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हमारे इस समाज चरित्र की आवश्यकता होती है। समाज चरित्र की वेदी पर अपनी व्यक्तिगत मांगों की बलि देनी होती है। वस्तुतः समाज की आवश्यकता के सामने व्यक्ति एवं परिवार की आवश्यकता को सहर्ष छोड़ना ही समाज चरित्र होता है। छोटी आवश्यकता को बड़ी आवश्यकता के लिए दरकिनार करना ही समाज चरित्र होता है। हम ईमानदारी पूर्वक हमारा व्यक्तिगत आकलन करें कि हम हमारे दैनिक जीवन में इस समाज चरित्र का कितना अनुशीलन कर पाते हैं। अभी हाल ही में संपन्न चुनाव ऐसा ही अवसर था जब हमारे इस समाज चरित्र की मांग बढ़ी हुई थी। प्रायः हम सभी अपने आपको समझदार कहने वाले लोग राजनीति में समाज रूप में हमारे समाज की भूमिका को लेकर विभिन्न मंचों पर चर्चा करते रहते हैं। सभी इस बात की चिंता करते हैं कि समाज रूप में हम अपेक्षित उपस्थिति नहीं दर्शा पाते। विधानसभा चुनाव इस उपस्थिति को दमदार बनाने का अवसर था। विचार करें, समीक्षा करें एवं ईमानदारी पूर्वक अपने आपका अवलोकन करें कि हम हमारे द्वारा ही जताई गई इस सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए कितना क्रियाशील रहे। कहीं हमारी क्रियाशीलता इस आवश्यकता के विपरीत तो नहीं थी, यह भी विचारणीय है। कहीं हमारी क्रियाशीलता का उत्प्रेरक हमारा कोई व्यक्तिगत स्वार्थ तो नहीं था? कहीं हमारी क्रियाशीलता का उत्प्रेरक मेरा व्यक्तिगत अहंकार तो नहीं था? कहीं मेरी क्रियाशीलता का उत्प्रेरक मेरी किसी से नाराजगी या मित्रता तो नहीं थी? मेरी क्रियाशीलता का कारण किसी राजनीतिक पार्टी के प्रति मेरी घृणा या निष्ठा तो नहीं थी? मेरी क्रियाशीलता की उत्प्रेरक किसी उम्मीदवार विशेष से निकटता या दूरी तो नहीं थी? यदि ऐसे ही सब प्रश्नों का उत्तर ना में आता है तो निश्चित रूप से हम समाज चरित्र की ओर उन्मुख थे। हमने यदि समाज की इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयत्न किया कि विधानसभा में हमारी उपस्थिति दमदार रहे और इसके लिए सभी प्रकार के व्यक्तिगत आग्रहों दुराग्रहों को दरकिनार किया तो निश्चित रूप से इस सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु हम समाज चरित्र की ओर उन्मुख हुए। लेकिन यदि अपनी व्यक्तिगत धारणा के कारण या किसी राजनीतिक दल या व्यक्ति के प्रति कुंठा के कारण हमारे प्रयास हमारे ही व्यक्ति के खिलाफ रहे तो हम स्वयं तय करें कि हम समाज चरित्र के कितने निकट थे। ऐसा भी नहीं है कि किसी सिद्धान्त के अपवाद नहीं होते लेकिन अपवाद भी तब ही स्वीकार्य होते हैं जब उस सिद्धान्त के पीछे की मूल भावना आहत न हो। जब ऐसा लगे कि कुछ स्वार्थी लोग सिद्धांत की आड़ में सिद्धान्त का ही दुरुपयोग कर रहे हैं तो अपवाद ग्रहणीय होता है लेकिन अपवाद की आड़ में अपनी व्यक्तिगत धारणाओं को पुष्ट करना तो स्वीकार नहीं किया जा सकता। तो अब जब चुनावी समर समाप्त हो गया है, हम सब को व्यक्तिशः ईमानदारी पूर्वक अपना अपना आकलन करना चाहिए कि हम स्वयं जिस सामाजिक आवश्यकता को प्रतिपादित करते रहे, उसके लिए कितने प्रयत्नशील रहे और कहीं इसके विपरीत तो क्रियाशील नहीं रहे।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	24.12.2018 से 27.12.2018 तक	रामदेव जी मंदिर **कचनारा** नाहरगढ़ तह. सीतामऊ, (मंदसौर)। मध्यप्रदेश। **सम्पर्क सूत्र :** महेन्द्रसिंह फतहगढ 9926685051 दयालसिंह सेदरा 9977800497
2.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**देगराय** (जैसलमेर)। देवीकोट, मूलाना, भैंसड़ा, सांकड़ा से बस उपलब्ध है।
3.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**फोगेरा** (शिव)। बाड़मेर से हरसाणी मार्ग पर फोगेरा, शिव से भी फोगेरा के लिए बस उपलब्ध है।
4.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	संस्कार पब्लिक स्कूल, **आहोर**। जिला-जालोर
5.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**हाडला** (बीकानेर)। कोलायत व बीकानेर से साधन।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2018 से 28.12.2018 तक	वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास, कृषि मंडी के सामने **बालोतरा**।
7.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 30.12.2018 तक	**घाटमपुर** (उ.प्र.)। रेल द्वारा कानपुर। वहां से बसें उपलब्ध।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	26.12.2018 से 29.12.2018 तक	जयमलकोट, **पुष्कर**।
9.	प्रा.प्र.शि.	27.12.2018 से 30.12.2018 तक	न्यू आर्यवीर अकादमी, **ताल**, जिला रतलाम (म.प्र.)। ताल हेतु जावरा, आलोट, महिदपुर से रेल, बस, टैक्सी उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** वीरेन्द्रसिंह ताल - 9039576006, मदनसिंह विक्रमगढ़ आलोट 9893606416
10.	मा.प्र.शि.	01.01.2019 से 07.01.2019 तक	**कसूम्बी** (नागौर)।
10.	विशेष महिला शिविर	01.01.2019 से 05.01.2019 तक	'शक्तिधाम' चमारज नर्सरी फार्म के पास, खमीसाणा रोड, सुरेन्द्रनगर, गुजरात। **सम्पर्क :** महावीरसिंह हरदास का बास, 9987405810

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

राव उदाजी की जयंती मनाई

पाली जिले के लौटोती गांव की उदावतों की पोल में उदावत महासभा द्वारा उदावत राठौड़ों के प्रथम पुरुष राव उदाजी की 556वीं जयंती 25 दिसम्बर को मनाई गई। जयंती कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिरोही के पूर्व राजपरिवार के मुखिया रघुवीरसिंह ने कहा कि राजपूतों को शौर्य एवं वीरता के कारण सम्मान दिया जाता रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में युवाओं की भागीदारी एवं एकता पर भी उन्होंने अपनी बात कही। आरपीएस भगवतसिंह मोहरा कलां ने राव उदाजी के रण कौशल एवं वीरता की जानकारी दी। प्रहलादसिंह बर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में उत्कृष्ट परिणाम देने वाली प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी नेवी
एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
अब आपकी सेवा में
आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी
कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
रेटिना
कॉर्निया
ग्लूकोमा
बाल नेत्र चिकित्सा
भैंगापन
आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व विश्नोई
शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

चारड़ा में प्रा.प्र.शिविर संपन्न

गुजरात में बनासकांठा प्रांत के चारड़ा गांव में 8 से 10 दिसम्बर तक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर में निकट के 20 गांवों के 90 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन अजीतसिंह कुणघेर ने सहयोगियों सहित किया। 9 दिसम्बर को शिविर में सहयोगी समाज बंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें आगामी 22 दिसम्बर को संघ स्थापना दिवस एवं अगले वर्ष में संघ कार्य को लेकर चर्चा की गई।

निशानेबाज दीपेन्द्रसिंह का सम्मान

केरल के त्रिवेद्रम में संपन्न 62वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में अपने शानदार प्रदर्शन के बल पर इंटरनेशनल ट्रायल के लिए क्वालिफाई करने वाले दीपेन्द्रसिंह शेखावत का 2 दिसम्बर को लक्ष्मणगढ़ के लाडाणी निकेतन में समाज द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर जयपालसिंह सांवलोदा, बालसिंह पालड़ी, ओलंपियन घुड़सवार विशाल सिंह, जीवराजसिंह, डॉ. नगेन्द्रसिंह नाथावत, रतनसिंह छिंछास आदि अनेक समाज बंधु उपस्थित रहे।

धर्मशास्त्र 'गीता'

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

गतांक से आगे...

धर्म के नाम पर यह कुरीति तब आई जब सर्व साधारण की शिक्षा पर कड़े प्रतिबंध लगे थे। आज शिक्षा सर्व साधारण को सुलभ है। मध्यकालीन हथकण्डे ध्वस्त हो गए, अब आप आंख में धूल भी तो नहीं झोंक सकते। क्यों नहीं आप धर्म की सही परिभाषा ले लेते? यत्किञ्चित् जो अवशेष हैं उसे भी समाप्त करने पर क्यों तुले हैं? आप मूल धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता लें, संसार को धर्म की वास्तविक जानकारी दें।

आइए देखें, 'गीता' के श्लोकांश **'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम्'** का आशय क्या है? चार वर्णों की संरचना मैंने की तो क्या मनुष्यों की चार श्रेणी बना दी? नहीं, **'गुणकर्म विभागशः'** - गुणों के माध्यम से कर्म को चार भागों में बांटा। जो सामग्री वितरण की गई वह है कर्म। यदि कर्म समझ में आ जाए तो बंटवारा भी समझ में आ जाएगा। 'गीता' के अनुसार, आत्मा ही सत्य है, परमतत्त्व है। उसे प्राप्त करने की नियत विधि, योग-विधि का नाम यज्ञ है। उस यज्ञ को चरितार्थ करना कर्म है, उस यज्ञ को कार्य रूप देना कर्म है। कर्म का अर्थ है आराधना, कर्म का आशय है चिन्तन। आप चिन्तन आरम्भ करें। आरम्भ में ही समाधि नहीं लगेगी। प्रायः आजकल ध्यान-शिविर लगाए जाते हैं तो क्या ध्यान लग जाता है? केवल एक औपचारिकता ही हाथ लगती है। इस कर्मपथ पर हम सफल कैसे हों? इसके लिए एक ही साधन-पद्धति को, कर्मपथ को चार भागों में बांटा। आरम्भ में मन नहीं लगता तो महापुरुष की सेवा करें- **'परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्' (गीता, 18/44)** सत्पुरुषों की सेवा, शरण-सान्निध्य से शनैः शनैः समझ आ जाती है, हृदय में विधि जागृत हो जाती है, भगवान् सार-संभाल करने लगते हैं। इससे उन्नत अवस्था आने पर प्रकृति के घने अंधकार से आत्मिक सम्पद् हृदय में एकत्र होने लगती है। आत्मिक सम्पत्ति स्थिर सम्पद् है, यही आपका निज धन है। शनैः शनैः इसे हृदय में अर्जित करें, यह वैश्य स्तर है। स्तर उन्नत होने पर प्रकृति के द्वन्द्वों का संघर्ष झेलने की क्षमता आ जाती है तो वही साधक क्षत्रिय श्रेणी पा लेता है। उस समय केवल शौर्य, तेज, पराक्रम, पीछे न हटने का स्वभाव रहता है। इस स्थिति का साधक कभी पराभूत नहीं होता। वह मोक्ष प्राप्त करके ही दम लेता है। संघर्ष झेलते हुए जब शत्रु मर जाते हैं, अन्तिम विकार भी मिट जाता है, ब्रह्म में विलय की योग्यता आ जाती है तो वही साधक ब्राह्मण स्तर का कर्त्ता हो जाता है। उस अवस्था में-

शमोः दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।
(गीता, 18/42)

मन का सहज शमन (मन जो वायु से भी तीव्रगामी है, इसका सहज शान्त प्रवाहित होना), इन्द्रियों का दमन, एकाग्रता, धारावाही चिन्तन की प्रवृत्ति, अनुभवी उपलब्धि, वास्तविक जानकारी- ब्रह्म में विलय देने वाली ये सारी योग्यताएं जब स्वभाव में ढल जाती हैं, अन्तःकरण में उनकी आदत पड़ जाती है, उस स्थिति में वह ब्राह्मण श्रेणी का कर्त्ता है। इतने पर भी अभी वह साधक ही है, अधूरा है। क्रमशः आत्मा विदित हो जाती है। परमात्मा का दर्शन, उसका स्पर्श और उसमें स्थिति मिल जाने पर श्रेणियां समाप्त हो जाती हैं. वह अपने सहज स्वरूप को प्राप्त कर लेता है। जिसके पीछे जन्म नहीं है, मृत्यु नहीं है। यही 'पुनर्जन्म न विद्यते' का आशय है जिसे प्राप्ति वाले प्रत्येक महापुरुष ने दुहराया है।

इस प्रकार **'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टाम्'** कर्म का विभाजन है- **'गुणकर्म विभागशः'**, यह मनुष्य का बंटवारा कदापि नहीं है। **'तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम्।' (गीता, 4/13)** उसके कर्त्ता, मुझ अव्यक्त आत्मा को अकर्त्ता जान। आप चार वर्णों का सृजन करते हैं तो करने के संस्कार आपको नहीं पड़ते? कारण यह है कि कर्मों का फल परमात्मा का दर्शन, स्पर्श, विलय और स्थिति मुझसे विलग नहीं है इसलिए कर्म के फल में मेरी स्पृहा नहीं है। फल था दर्शन, स्पर्श और विलय। वह परमात्मा मुझसे भिन्न नहीं है- **'इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।' (गीता, 4/14)** इस स्तर से जो भी मुझे जान लेता है, मेरी इस स्थिति को भी जो अर्जित कर ले उसे भी कर्म नहीं बांधते।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।।
(गीता, 4/15)

अर्जुन। यही समझकर पूर्व में होने वाले मुमुक्षुजनों ने (मोक्ष की इच्छा वाले पथिकों ने) इस कर्मपथ पर कदम रखा। क्या जानकार? यही कि भगवान् श्रीकृष्ण को कर्म नहीं बांधते, उस स्तर से जो जानता है उसे कर्म नहीं बांधते और मैं जानूंगा तो मुझे भी कर्म नहीं बांधेंगे क्योंकि कर्मों का फल परमात्मा विलग नहीं होगा। अस्तु, श्रीकृष्ण जो भी रहे हों- परमात्मा, पुरुषोत्तम इत्यादि- वह पद सबके लिए सुलभ है, आप भी वह स्थिति प्राप्त कर सकते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण महायोगेश्वर थे। 'गीता' में स्थान-स्थान पर स्वयं उन्होंने अपना परिचय इसी रूप में दिया और 'गीता' के समापन पर प्रत्यक्षदर्शी संजय ने अपना निर्णय सुनाया- **(क्रमशः)**

'म्हा बेटा हां राजपूत रा'

'म्हा बेटा हां राजपूत रा'
इण मायड़ भोम री आंख्या रो तारो,
सांच रो सगो साथी अर कपटी रो दुसमी करारो।
दियो वचन तो निभाया सरसी,
भले तज्या प्राण बंधयो वचनारो।।
गांवा हा गुण धरती रे एड़ा सपूत रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

रणखेतां में जूंझिया जनम भोम सारू,
मरू इक पण सौ-सौ ने मारूं।
शीश कटिया पण धड़ लड़े हा,
एड़ा वीरां रा पगलिया पखारूं।।
वे सांचा कर्ज निभाया हा मायड़ रे दूध रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

वे महाराणा प्रताप अर पृथ्वीराज चौहान,
जयमल, उदो, जैता, कूंपा सा वीर महान।
रिड़मल, दुर्गा, जोधा, उदय, सांगा,
चुण्डा, कुम्भा, शक्ता, विरम, कल्लो अर मान।।
अमर है गीतड़ा एड़ा अणगिण वीर सपूत रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

काट शीश वा सेलाणी भेज दिवी हाड़ी रजपूतण,
सोलह हजार राणियों सागे कियो जौहर वा पद्मण।
घास री रोटी खाई महाराणी राणा रो स्वाभिमान बचावण,
लाखों क्षत्राणीयां सती हुईं उणारी होड़ करसी कुण।।
पग-पग पर चुणिया मिलसी कंई छत्रीयां अर चबूतरा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

गोवंश म्हाने हा घणा प्यारा,
क्षणैक में चढ़ जाता उणोरी वाहरा।
पग-पग ऊबां हा प्रजा री लारा,
हा ईष्ट देव में भरोसा न्यारा।।
झिझक उठता बैरी आया सुपणा जाणें भूत रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

दुखियों रा दुखड़ा मेटे हड़बू, पाबू राठौड़,
हरजी भाटी अर रामदेव री रुणिचा में ऊंची ठौड़।
ले इकतारा गावे बाई मेड़तणी मीरा,
नटवर नागर म्हारा माथा रा मोड़।।
तीरगा भव सागर सू हरी नाम प्यारा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

पर पीड़ा ने निज री जाणें,
निर्बल रे ऊबो रहे सिराणें।
पर नारी ने मायड़ जाणें,
पाग केसरिया सोहे ज्यानें॥
ए हैं धर्म-कर्म सांचा राजपूत रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

●●●

हैं ए सगली बित्योड़ी गौरव गाथा,
कांई लिखु ईब वर्तमान री बातां।
खिंचे हैं भाई इक-दुजे री लातां,
पुछेला टाबर विरासत कांई दियो थे म्हाने दाता??
कर जोड़ 'महिपाल' कहे इक होय सबल बणो
समाज राजपूत रा।
हां, हां म्हा बेटा हां राजपूत रा।।

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनावों में विजयी राजपूत प्रत्याशी

1.	प्रद्युम्नसिंह तोमर	ग्वालियर	कांग्रेस
2.	गोविन्दसिंह कुशवाह	लहार	कांग्रेस
3.	ओ.पी.एस. भदौरिया	मेहगांव	कांग्रेस
4.	के.पी.सिंह चौहान	पिछोर	कांग्रेस
5.	घनश्यामसिंह बुंदेला	सेवड़ा	कांग्रेस
6.	गोपालसिंह चौहान	चंदेरी	कांग्रेस
7.	लक्ष्मणसिंह	चचौड़ा	कांग्रेस
8.	जयवर्धनसिंह	राघौगढ़	कांग्रेस
9.	बृजेन्द्रसिंह राठौड़	पृथ्वीपुर	कांग्रेस
10.	विक्रमसिंह बुंदेला	राजनगर	कांग्रेस
11.	गोविन्दसिंह राजपूत	सुरखी	कांग्रेस
12.	प्रियवृत सिंह	खिलचीपुर	कांग्रेस
13.	राज्यवर्धनसिंह दतीगांव	बदनावर	कांग्रेस
14.	महेन्द्रसिंह सिसोदिया	बमौरी	कांग्रेस
15.	अरविन्दसिंह भदौरिया	अटेर	भाजपा
16.	बृजेन्द्र प्रतापसिंह बुंदेला	पन्ना	भाजपा
17.	नगेन्द्रसिंह	नागौद	भाजपा
18.	राकेशपाल सिंह	केवलारी	भाजपा
19.	विक्रमसिंह	रामपुर बाघेलान	भाजपा
20.	दिव्यराजसिंह	सिरमौर	भाजपा
21.	नागेन्द्रसिंह	गुढ़	भाजपा
22.	विजयपालसिंह	सोहागपुर	भाजपा
23.	रामपालसिंह	सिलवानी	भाजपा
24.	सुरेन्द्रसिंह सेंगर	शमशाबाद	भाजपा
25.	ऊषा ठाकुर	महू	भाजपा
26.	यशपालसिंह सिसोदिया	मंदसौर	भाजपा
27.	दिलीपसिंह परिहार	नीमच	भाजपा
28.	राजवर्धनसिंह	नरसिंहगढ़	भाजपा
29.	संजीवसिंह कुशवाह	भिंड	बसपा
30.	सुरेन्द्रसिंह	बरहानपुर	निर्दलीय
31.	विक्रमसिंह राणा	सुसनेर	निर्दलीय।

(पृष्ठ चार का शेष)

बालोतरा

बाड़मेर

आवृति बढ़ाएं...

बहुत गहरी और आगे की बातें जो पूरी कौम के लिए, समाज के लिए, जन-जन के लिए, सभी कालों के लिए, हर परिस्थिति के लिए लिखी वह उनकी अमूल्य निधि है। उसी में से यदि हम चाहें तो उनकी लिखी कोई भी पुस्तक, कोई भी गीत, गीत की कोई भी पंक्ति, एक-एक शब्द हमारे जीवन को दिशा दे सकते हैं। उन्होंने मात्र 55 वर्ष के जीवन में जो कुछ दिया वह सदियों तक समझने के बाद भी पूरा नहीं होने वाला। लेकिन एक शाश्वत चीज देकर गए हैं वह यह आश्वासन है कि शरीर का अंत होता है लेकिन परमेश्वर का अंश यह जीवात्मा समाप्त नहीं होता है। इस जीवन में हम जो कुछ सुन रहे हैं, कर रहे हैं उसी का निचोड़ अगले जीवन में हमें मिलेगा। इसलिए हम चिंतित न हों कि कितना चल पाए क्योंकि यह सदियों तक समझने का प्रयास करने पर समझने वाली बात है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम एक साधना है, जो उन्होंने हमें दिया। हम संघ का काम ऐसे करते हैं जैसे कोई पारायण कर रहे हैं, अनुष्ठान कर रहे हैं। यह औपचारिकता है। शाखा में, शिविर में सारी औपचारिकता है लेकिन यही औपचारिकता हमारे अनौपचारिक जीवन की भूमिका बनाती है। हमारे भौतिक जीवन को सूक्ष्म जीवन की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। उनका एक-एक शब्द, एक-एक गीत, एक-एक पुस्तक, एक-एक कर्म अनंत समय तक प्रेरणा देता रहेगा। हम इसे सीख लें और जाकर सुना दें यह तो हमारी जीवन के प्रति लापरवाही होगी। वे जितने गंभीर थे अपने लिए, जीवन के लिए एवं समाज के लिए उतने हम गंभीर नहीं हैं। हम अपने आपको खटखटाएं कि हमने कितना अनुकरण किया है, जब तक अनुकरण करना हमारे जीवन में नहीं में नहीं आएगा तब तक इसी तरह लापरवाही में जीवन बीतता रहेगा लेकिन यह भी व्यर्थ नहीं जाएगा। यह गीता का आश्वासन है कि जो कुछ भी हम करेंगे, अनंत जन्मों तक हमारे जीवन को प्रभावित करेगा। यह बीज जो श्री क्षत्रिय युवक रूप कार्य प्रणाली का हमारे में डाला है, हम प्रार्थना करें कि वह सदैव हमें प्रेरणा देता रहे। भगवान करें कि तनसिंह जी की कृपा से वह जागरण हमारे में आए। हम अपने लिए, परिवार व समाज के लिए, जन-जन के लिए जागृति का संदेश दे सकें। यही उनके जीवन का सार है। आज हम उनका स्मरण कर रहे हैं तो स्मरण ही रखें, भूले नहीं, भूल जाएं तो फिर स्मरण करें, जहां भी रहें, स्मरण रखें कि मैं पूज्य तनसिंहजी के मार्ग पर चलने वाला हूं।

केन्द्रीय कार्यालय में प्रातःकालीन शाखा में आयोजित इस कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी, दीपसिंह बैण्यांकाबास, संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ सहित उपस्थित स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। जयपुर के अलावा अन्य शाखाओं में भी पुण्यतिथि मनाई गई। बाड़मेर में प्रतिवर्ष की भांति पूज्यश्री की छत्री पर कार्यक्रम रखा गया। प्रातः 5.15 पर राजपूत मुक्तिधाम स्थित स्मारक पर सभी स्वयंसेवक पहुंचे एवं 'देव तुम्हारे सन्मुख तुच्छ हैं' प्रार्थना के साथ 'जलवे अनेक रण के' स्मृति गीत गाया तथा श्रद्धासुमन अर्पित किए। सभी पूज्यश्री के मौन आशीर्वाद के साथ उनके बताए मार्ग पर सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा लेकर कृतज्ञता पूर्वक नतमस्तक हुए। मुंबई की तणेराज शाखा में उनके जीवन पथ पर चलने के आशीर्वाद की अर्चना के साथ पुण्यतिथि मनाई गई। बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री की तपस्या का फल है। यह एक ऐसा सुगम मार्ग है जिस पर चलकर हम जीवन को सार्थक कर सकते हैं। संघ का मार्ग व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं संसार के समस्त प्राणियों के कल्याण का मार्ग है, हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें यह मार्ग मिला है। बाड़मेर के गांधी नगर स्थित राजपूत सभा भवन में पूज्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई। श्री महाराणा प्रताप हॉस्टल शाखा दियोदर में पूज्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई। मंदीपसिंह, सूरजसिंह वातम, गणपतसिंह पालड़ी, महेन्द्रसिंह गोलगाम आदि ने शाब्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। बालोतरा के वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास शाखा में प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा की उपस्थिति में पुण्यतिथि मनाई गई। बंगलोर के निकट चिकमंगलूर में राजपूत युवा शक्ति द्वारा कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रवासी बंधु शामिल हुए। सिवाणा की कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। उपस्थित स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की एवं उनके सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक जीवन पर चर्चा की। दियोदर तहसील के गोलवी गांव की बालिका शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान की बालिकाओं ने कार्यक्रम आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम रख अंगारी गांव में श्रद्धांजलि अर्पित की। मेवाड़ के गोपाल शरण सिंह सहाड़ा, सुमेरसिंह घसोई, कुलराजसिंह हनुमतिया आदि ने पूज्यश्री के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

चिकमंगलूर (कर्नाटक)

दियोदर (गुजरात)

जवाब मांगते...

तीसरा सवाल हमारी नकारात्मक राजनीति है, 70 वर्ष से अधिक समय तक इस व्यवस्था में रहने के बाद भी हम आज तक हराने की ही बात करते हैं और इसे अपने जातीय स्वाभिमान के रूप में प्रचारित भी करते है। विगत 15-20 वर्षों से कुछ सकारात्मक बनने का प्रयास प्रारम्भ किया था उसे भी हमने इस बार धो दिया। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि हम यह नकारात्मकता कब छोड़ेंगे। चौथा सवाल यह है कि लोकतांत्रिक राजनीति में संख्या का बहुत महत्व होता है। जिनके माथे ज्यादा गिनाए जाते हैं, सत्ता की चाबी उधर ही घूमती है। हमारे जोशीले नौजवान आज भी कहते हैं कि कम हो जाएंगे तो क्या फर्क पड़ेगा, अपने आपको समझदार कहने वाले लोग अपनों की हार पर खुशियां मना रहे हैं। वर्तमान लोकतांत्रिक राजनीति जाति आधारित है, वर्ग आधारित है और यदि हम अपनी ही जाति या वर्ग के राजनीतिक प्रतिनिधियों की हार पर खुशी व्यक्त करें तो इसे क्या कहा जाए, यह भी कचोटने वाला सवाल है? आगे का सवाल हमारी भावनाओं और विचारशीलता के असंतुलन का है। हमें जहां भावनाओं के आधार पर निर्णय लेना चाहिए वहां विचार करने लगते हैं और जहां विचार करके कदम उठाना चाहिए वहां भावनाओं के भंवर में फंस जाते हैं। यदि विगत तीन चार वर्षों के इतिहास को देखें तो हम ऐसे ही भंवरों में फंसते गए और पूरे समाज को फंसाते गए। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं हमारे इस असंतुलन के कारण सामाजिक महत्वकांक्षाएं बनती रही। व्यक्तिगत अहंकार सामाजिक स्वाभिमान बनता रहा और हम एक समाज के रूप में उसमें फंसते रहे। ऐसे ही अनेकों सवाल समाज की पीड़ा से पीड़ित हर व्यक्ति के मन में उठते हैं, क्या हम इस पीड़ा को समझ कर कुछ सबक लेंगे या अपनी ही धारणाओं के चंगुल में फंसकर अपनी सामाजिक भाव को यूं ही व्यर्थ लुटाते रहेंगे। सवाल हमारे सामने हैं, उत्तर भी हमें ही खोजने हैं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के 73वें स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

क्षात्र धर्म के पालनार्थ कड़ी-कड़ी जोड़ने वाले, दुष्ट दलन हेतु शंभु नयन बनने की प्रेरणा देने वाले, धैर्यपूर्वक कदम दर काम गत वैभव की ओर बढ़ाने वाले, भाव कर्म को एक बनाकर व्यक्तिवाद बिसराने को तैयार करने वाले, युगों से बिछुड़ों का पुनर्मिलन कराने वाले, धर्म ध्वजा की आज्ञा पालनार्थ प्रशिक्षण देने वाले एवं भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उद्बोधित निष्काम कर्मयोग में प्रवृत करने वाले श्री क्षत्रिय युवक संघ के 73वें स्थापना दिवस पर सभी समाज बंधुओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : श्री आशापुरा इंजीनियरिंग एण्ड कंस्ट्रक्शन कंपनी
पांध्रो, कच्छ (गुजरात)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org